

श्री राधे

श्री राधे

कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम, राम राम लरे लरे॥



वठपनिम्

कर्म शाश्वत दामोदर जी के नित्यसिंह प्रेक्षण



## विश्वगुरु श्रील जीव गोस्वामी पाद जी

बुध भक्त गणार्चित पादयुगं, परधर्म सुशिक्षक विश्वगुरुम्।

विपुलीकृत गौरव विश्वभुवं, प्रणमामि सदा प्रभु जीव पदम्॥

अभिमान समुन्नत चित्तहरं, छल भक्ति गजान्तकसिंहवरम्।

व्रज भक्ति विशारद पूज्य परं, प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम्॥

# विषय सूची

1.	श्री गुरु प्रणाम मन्त्र.....	(1)
2.	श्री भागवत प्रणाम मन्त्र .....	(1)
3.	विष्वगुरु श्रील जीव गोरखामी पाठ जी प्रणाम मन्त्र.....	(1)
4.	श्रील रूपगोरखामीपाठ जी प्रणाम मन्त्र.....	(1)
5.	श्री चैतन्य महाप्रभु प्रणाम मन्त्र.....	(2)
6.	श्रीकृष्ण प्रणाम मन्त्र.....	(2)
7.	श्री याधा प्रणाम मन्त्र .....	(2)
8.	श्री याधा दामोदर प्रणाम मन्त्र .....	(2)
9.	श्री तुलसी प्रणाम मन्त्र .....	(2)
10.	वैष्णव प्रणाम मन्त्र .....	(3)
11.	पंचतत्त्व नाम .....	(3)
12.	ठरि नाम महामंत्र .....	(3)
13.	श्री जगन्नाथ प्रणाम मन्त्र.....	(3)
14.	श्री गिरिराज प्रणाम मन्त्र .....	(3)
15.	श्री तुलसी चयन मन्त्र.....	(4)
16.	श्री तुलसी प्रदक्षिणा मन्त्र.....	(4)
17.	भोग लगाने के मन्त्र .....	(4-5)
18.	श्री चतुर्लोकी गीता .....	(6)
19.	श्री चतुर्लोकी भागवत .....	(7)
20.	श्रीकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र .....	(8-10)

# विषय सूची

21.	श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र .....	(11-14)
22.	श्री गोविन्द स्तोत्र.....	(15-22)
23.	श्री जगन्नाथाष्टकम्.....	(23-24)
24.	श्री वैतन्य शिक्षाष्टकम् .....	(25-26)
25.	श्री जीवाष्टकम् .....	(27-28)
26.	श्री गुर्वाष्टकम्.....	(29-30)
27.	श्रीगुरु वन्दना .....	(31-32)
28.	श्री दामोदराष्टकम् .....	(33-34)
29.	श्री गोपी गीत .....	(35-37)
30.	श्री उपदेशामृत .....	(38-40)
31.	श्री दशावतार स्तोत्र .....	(41-42)
32.	आह्वान कीर्तन-1(हरये नमः) .....	(43-44)
33.	आह्वान कीर्तन-2(जय राधा माधव).....	(44)
34.	आरतियां .....	(45)
◆	श्री भागवत आरती.....	(45)
◆	श्री राधा दामोदर आरती.....	(46)
◆	श्री गौर आरती .....	(47)
◆	श्री नृसिंह प्रार्थना अथवा आरती.....	(48)
◆	श्री तुलसी आरती.....	(49)
35.	छ: वैष्णव अपराध .....	
	एवं दस नाम अपराध .....	(50-54)

## श्री गुरु प्रणाम मंत्र

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाज्ञनशलाकया ।  
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

## श्री भागवत प्रणाम मंत्र

कस्मै येन विभासितोऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा  
तद्वूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तद्वूपिणा ।  
योगीन्द्राय तदात्मनाथ भगवद्राताय कारुण्यतस्  
तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतं सत्यं परं धीमहि ॥

## विश्वगुरु श्रीलजीव गोस्वामी पाद जी का प्रणाम मंत्र

बुधभक्त गणार्चित पादयुगं, परधर्म सुशिक्षक विश्वगुरुम् ।  
विपुलीकृत गौरव विश्वभुवं, प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥  
अभिमान समुन्नत चितहरं, छलभक्ति गजान्तक सिंहवरम् ।  
व्रजभक्ति विशारद पूज्यपरं, प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥

## श्रील रूप गोस्वामी पाद जी का प्रणाम मंत्र

श्रीचैतन्य मनोऽभिष्टु स्थापितं येन भूतले ।  
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम् ॥

**श्री चैतन्य महाप्रभु जी का प्रणाम मंत्र**  
नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदायते ।  
कृष्णाय कृष्णचैतन्य नाम्ने गौरत्विषे नमः ॥

**श्रीकृष्ण प्रणाम मंत्र**  
हे कृष्ण करुणासिम्बो दीनबन्धो जगात्पते ।  
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तुते ॥

**श्री राधा प्रणाम मंत्र**  
तप्तकाञ्छनगौरांगि राधे वृन्दावनेश्वरि ।  
वृषभानुसुते देवि प्रणमामि हरिप्रिये ॥

**श्रीराधा दामोदर जी का प्रणाम मंत्र**  
श्रीजीव प्रकटीकृतं राधालिंगित विग्रहम् ।  
राधादामोदरम् वन्दे श्रीजीवजीवितेश्वरम् ॥

**श्री तुलसी प्रणाम मंत्र**  
वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च ।  
कृष्णभक्तिप्रदे देवी सत्यवत्यै नमो नमः ॥

### **श्री वैष्णव प्रणाम मंत्र**

वाञ्छा कल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च ।  
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥

### **पंचतत्त्व नाम**

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद ।  
श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द ॥

### **हरि नाम महामंत्र**

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।  
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ॥

### **श्री जगन्नाथ प्रणाम मंत्र**

नीलाचल निवासाय नित्याय परमात्मने ।  
बलभद्र सुभद्राभ्यां जगन्नाथाय ते नमः ॥

### **श्री गिरिराज प्रणाम मंत्र**

नमस्ते गिरिराजाय श्री गोवर्धन नामिने ।  
अशेष क्लेश नाशाय परमानन्द दायिने ॥  
गोवर्धन जयति शैलकुलाधिराजो  
यो गोपिकाभिरुदितो हरिदासवर्यः ।  
कृष्णेन शक्रमखभंगकृतार्चितो यः  
सप्ताहमस्य करपद्मतलेऽप्यवासीत् ॥

## श्री तुलसी चयन मंत्र

मोक्षकहेतो धरणीप्रशस्ते, विष्णोः समस्तस्य गुरोः प्रियेति ।  
आराधनार्थं वर मञ्जरीकं लुनामि पत्रं तुलसी क्षमस्व ॥

## श्री तुलसी प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ।  
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणः पदे पदे ॥

## भगवान् को भोग अर्पण करने के मंत्र

बुधभक्त गणार्चित पादयुगं,  
परधर्म सुशिक्षक विश्वगुरुम् ।  
विपुलीकृत गौरव विश्वभुवं,  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥  
अभिमान समुन्नत चितहरं,  
छलभक्ति गजान्तक सिंहवरं ।  
व्रजभक्ति विशारद पूज्य परं,  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥

श्रीचैतन्यमनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले ।  
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम् ॥  
नमो महावदान्याय कृष्णप्रेम प्रदायते ।  
कृष्णाय कृष्ण चैतन्य नामे गौरत्विषे नमः ॥

श्रीजीव प्रकटीकृतं राधालिंगित विग्रहम् ।  
राधादामोदरम् वन्दे श्रीजीव जीवितेश्वरम् ॥  
जय श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद ।  
श्री अद्वैत गदाधर श्री वासादि गौरभक्त वृन्द ॥  
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।  
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ॥  
(प्रत्येक मन्त्र का उच्चारण तीन बार करें)



## चतुः श्लोकी गीता

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।  
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भाव समन्विताः ॥  
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।  
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥  
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।  
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥  
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।  
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥

### 【चतुःश्लोकी गीता पाठ का महत्त्व】

भगवद्गीता के दशम अध्याय के 8, 9, 10 और 11 ये चार श्लोक सम्पूर्ण गीता का सार माने जाते हैं। इन श्लोकों में गीता शास्त्र के प्रतिपाद्य विषयों का निरूपण है। इन श्लोकों का नित्य पाठ करने से भगवान् श्रीकृष्ण की परम अनुकम्पा प्राप्त होती है।

## चतुः श्लोकी भागवत

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत्परम् ।  
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत् सोऽस्यहम् ॥  
ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत् न प्रतीयेत् चात्मनि ।  
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथा तमः ॥  
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।  
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥  
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनात्मनः ।  
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥

### 【चतुःश्लोकी भागवत पाठ का महत्त्व】

श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध के नवें अध्याय के 33, 34, 35 और 36 ये चार श्लोक सम्पूर्ण भागवत का सार माने जाते हैं। इन श्लोकों में भागवत शास्त्र के प्रतिपाद्य विषयों का निरूपण है। इन श्लोकों का नित्य पाठ करने से भगवान् श्रीकृष्ण की परम अनुकम्पा प्राप्त होती है।

## श्रीकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र

भजेब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं  
सुभक्तचित्तरंजनं, सदैव नन्दनन्दनम् ।  
सुपि॑च्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं  
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥(1)

मनोजगर्वमोचनं, विशाललोललोचनं  
विधूतगोपशोचनं नमामिपद्मलोचनं ।  
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं  
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणं ॥(2)

कदम्बसूनुकुण्डलं, सुचारुगण्डमण्डलं  
ब्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।  
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया  
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकं ॥(3)

सदैव पादपंकजं मदीयमानसेनिजं  
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकं ।  
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं  
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥(4)

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं,  
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् ।  
द्वग्न्तकान्तभंगिनं सदासदालिसंगिनं  
दिने-दिने नवं-नवं नमामि नन्दसम्भवं ॥(5)

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं  
सुरद्विषत्रिकन्दनं नमामि गोपनन्दनं ।  
नवीन गोपनागरं नवीनकेलि-लम्पटं  
नमामि मेघसुन्दरं तडित्रभालसत्पटम् ॥(6)

समस्त गोप मोहनं, हृदम्बुजैक मोदनं  
नमामिकुंजमध्यगं प्रसन्न भानुशोभनम् ।  
निकामकामदायकं द्वग्न्तचारुसायकं  
रसालवेणुगायकं नमामिकुंजनायकम् ॥(7)

विदग्ध गोपिकामनो मनोज्ञतत्पशायिनं  
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवन्हिपायिनम् ।  
किशोरकान्तिरंजितं द्वग्नंजनं सुशोभितं  
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ॥(8)



यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा,  
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् ।  
प्रमाणितं स्तवंद्वयं पठन्ति प्रातरुखिताः  
त एव नन्दनन्दनं मिलन्ति भाव संस्थिताः ॥(9)



**श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र**  
 मुनीन्द्र वृन्द वन्दिते त्रिलोक शोकहारिणि  
 प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुञ्ज भूविलासिनी ।  
 ब्रजेन्द्र भानु नन्दिनी व्रजेन्द्र सूनुसंज्ञंते  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(1)

अशोक वृक्ष वल्लरी वितानमण्डप स्थिते  
 प्रवालज्वाल पल्लव प्रभाऽरूणांगि कोमले ।  
 वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(2)

अनंगरंगमंगल प्रसंगभंगुरभुवां  
 सुविभ्रमं ससंभ्रमं द्वगन्तबाणपातनैः ।  
 निरन्तरं वशीकृत प्रतीतिनन्दनन्दने  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(3)

तडिसुवर्णचम्पक प्रदीप्तगौरविग्रहे  
 मुखप्रभापरास्त कोटि शारदेन्दुमण्डले ।  
 विचित्रचित्रसंचरच्वकोरशावलोचने  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(4)



मदोन्मदातियौवने प्रमोद मानमण्डिते  
 प्रियानुरागरंजिते कलाविलास पण्डिते ।  
 अनन्यधन्यकुञ्जराज कामकेलिकोविदे  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्षभाजनम् ॥(5)

अशेषहावभाव धीरहीर हार भूषिते  
 प्रभूतशातकुम्भकुम्भ कुम्भिकुम्भसुस्तनी ।  
 प्रशस्तमन्द हास्य चूर्ण पूर्ण सौख्य सागरे  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(6)

मृणालबालवल्लरी तरंगरंगदोर्लते  
 लताग्रलास्यलोलनील लोचनावलोकने ।  
 ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ मुग्ध मोहनाश्रये  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(7)

सुवर्णमालिकांचिते त्रिरेखकम्बुकण्ठगे  
 त्रिसूत्रमंगलीगुण त्रिरत्नदीप्तिदीप्तिति ।  
 सलौलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते  
 कदाकरिष्यसीह माम् कृपा कटाक्षभाजनम् ॥(8)





नितम्बबिम्बलम्बमान पुष्पमेखलागुणे  
 प्रशस्तरत्नकिंकिणी कलापमध्यमंजुले ।  
 करीन्द्रशुण्डदण्डिका वरोहसौभगोरुके  
 कदाकरिष्टसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(9)

अनेक मन्त्र नादमंजु नूपुरारवस्खलत्  
 समाजराजहंसवंश निकणातिगौरवे ।  
 विलोलहेमवल्लरी विडम्बिचारुचंक्रमे,  
 कदाकरिष्टसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(10)

अनन्तकोटि विष्णुलोक नम्र पद्मजार्चिते,  
 हिमाद्रिजा पुलोमजा विरंचिजावरप्रदे ।  
 अपार सिद्धि वृद्धि दिग्ध सत्पदांगुलीनखे  
 कदाकरिष्टसीह माम् कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥(11)

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी  
 त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी ।  
 रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोद काननेश्वरी  
 व्रजेश्वरी व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोस्तुते ॥(12)





इतीदमद्भुतस्तवं निशम्य भानुनन्दिनी  
करोतु संतरं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।  
भवेत्तदैव संचित त्रिरूपकर्मनाशनं,  
लभेत्तदावजेन्द्रसूनु मंडलप्रवेशनम् ॥(13)



श्री गोविन्द स्तोत्रम्

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः ।

अनादिरादिगोविन्दः सर्वकारणकारणम् ॥(1)

चिन्तामणिप्रकरसद्बासु कल्पवृक्ष

लक्ष्मावृतेषु सुरभिरभिपालयन्तम् ।

लक्ष्मीसहस्रशतसम्भमसेव्यमानं

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(2)

वेणुं क्षणन्तमरविन्ददलायताक्षं

बहवितंसमसिताम्बुद सुन्दराङ्गम् ।

कन्दर्प कोटि कमनीय विशेषशोभं

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(3)

आलोलचन्द्रकलसद्वन्माल्यवंशी

रत्नाङ्गदं प्रणयकेलिकलाविलासम् ।

श्यामं त्रिभङ्गललितं नियत प्रकाशं

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(4)

अङ्गनि यस्य सकलेन्द्रियवृत्तिमन्ति  
पश्यन्ति पान्ति कलयन्ति चिरं जगन्ति ।  
आनन्दचिन्मयसदुज्ज्वल विग्रहस्य  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(5)

अद्वैतमच्युतमनादिमनन्त रूपम्  
आद्यं पुराणपुरुषं नवयौवनं च ।  
वेदेषु दुर्लभमदुर्लभमात्मभक्तौ  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(6)

पन्थास्तु कोटिशत वत्सरसम्प्रगम्यो  
वायोरथापि मनसो मुनिपुङ्गवानाम् ।  
सोऽप्यस्ति यत्प्रपदसीम्यविचिन्त्यतत्त्वे  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(7)

एकोऽप्यसौ रचयितुं जगदण्डकोटि-  
यच्छक्तिरस्ति जगदण्डचया यदन्तः ।  
अण्डान्तरस्थं परमाणुचयान्तरस्थं  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(8)

यद्वावभावित धियो मनुजास्तथैव  
सम्प्राप्य रूपमहिमासनयानभूषाः ।  
सूक्तैर्यमेव निगमप्रथितैः स्तुवन्ति  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(9)

आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिस्  
ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभिः ।  
गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतो  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(10)

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन  
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति ।  
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्य गुण स्वरूपं  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(11)

रामादिमूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन्  
नानावतारमकरोद भुवनेषु किन्तु ।  
कृष्णः स्वयं समभवत्परमः पुमान् यो  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(12)

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि-  
कोटिष्वशेषवसुधादि विभूतिभिन्नम् ।  
तद् ब्रह्म निष्कलमनन्तमशेषभूतं  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(13)

माया हि यस्य जगदण्डशतानि सूते  
त्रैगुण्यतद्विषयवेदवितायमाना ।  
सत्त्वावलम्बिपरसत्त्वं विशुद्धसत्त्वं  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(14)

आनन्दचिन्मयरसात्मतया मनःसु  
यः प्राणिनां प्रतिफलन् स्मरतामुपेत्य ।  
लीलायितेन भुवनानि जयत्यजसं  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(15)

गोलोकनाम्नि निजधाम्नि तले च तस्य  
देवीमहेशहरिधामसु तेषु तेषु ।  
ते ते प्रभावनिचया विहिताश्व येन  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(16)

सृष्टिस्थिति प्रलय साधनशक्तिरेका  
छायेव यस्य भुवनानि विभर्ति दुर्गा ।  
इच्छानुरूपमपि यस्य च चेष्टते सा  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(17)

क्षीरं यथा दधि विकारविशेषयोगात्  
सञ्चायते न हि ततः पृथगस्ति हेतोः ।  
यः शम्भुतामपि तथा समुपैति कार्याद्  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(18)

दीपार्चिरिव हि दशान्तरमभ्युपेत्य  
दीपायते विवृत हेतु समानधर्मा ।  
यस्ताद्वगेव हि च विष्णुतया विभाति  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(19)

यः कारणार्णवजले भजति स्म योग-  
निद्रामनन्तजगदण्डसरोमकूपः ।  
आधारशक्तिमवलम्ब्य परां स्वमूर्ति  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(20)

यस्यैकनिश्चसितकालमथावलम्ब्य  
जीवन्ति लोमविलजा जगदण्डनाथः ।  
विष्णुर्महान् स इह यस्य कलाविशेषो  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(21)

भास्वान् यथाश्मशकलेषु निजेषु तेजः  
स्वीयं कियत्प्रकटयत्यपि तद्वदत्र ।  
ब्रह्मा य एष जगदण्डविधानकर्ता  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(22)

यत्पादपल्लवयुगं विनिधाय कुम्भ  
द्वन्द्वे प्रणामसमये स गणाधिराजः ।  
विघ्नान् विहन्तुमलमस्य जगत्त्रयस्य  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(23)

अग्निर्मही गगनमम्बु मरुद्विशश्व  
कालस्तथात्ममनसीति जगत्त्रयाणि ।  
यस्माद् भवन्ति विभवन्ति विशन्ति यं च  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(24)

यच्चक्षुरेष सविता सकलग्रहाणं  
राजा समस्तसुरमूर्तिरशेषतेजाः ।  
यस्याज्ञया भ्रमति समृतकालचक्रो  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(25)

धर्मोऽथ पापनिचयः श्रुतयस्तपांसि  
ब्रह्मादिकीटपतंगावधयश्च जीवाः ।  
यद्वत्तमात्रविभवप्रकट प्रभाव  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(26)

यस्त्विन्द्रगोपमथवेन्द्रमहो स्वकर्म-  
बन्धानुरूपफलभाजनमातनोति ।  
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(27)

यं क्रोधकामसहजप्रणयादिभीति  
वात्सल्यमोहगुरुगौरवसेव्यभावैः ।  
सञ्चिन्त्य तस्य सदशीं तनुमापुरेते  
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥(28)



श्रियः कान्ताः कान्तः परमपुरुषः कल्पतरवो  
द्वुमा भूमिश्चिन्तामणिगणमयि तोयममृतम् ।  
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रियसखि  
चिदानन्दं ज्योतिः परमपि तदास्वाद्यमपि च ॥(29)

स यत्र क्षीराब्धिः स्रवति सुरभीभ्यश्च सुमहान्  
निमेषार्धाख्यो वा व्रजति न हि यत्रापि समयः ।  
भजे श्वेतद्वीपं तमहमिह गोलोकमिति यं  
विदन्तस्ते सन्तः क्षितिविरलचाराः कतिपये ॥(30)



## श्रीजगन्नाथाष्टकम्

कदाचित कालिन्दी तट विपिन संगीत तरवो  
मुदाभीरीनारी वदनकमलास्वाद मधुपः ।  
रमा शम्भु ब्रह्मामरपति गणेशार्चित पदो  
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(1)

भुजे सब्ये वेणु शिरसि शिखिपिछं कटितटे  
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि कटाक्षं विदधते ।  
सदा श्रीमद्वृन्दावन वसति लीलापरिचयो  
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(2)

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे  
वसन् प्रासादान्तः सहज-बलभद्रेण बलिना ।  
सुभद्रा मध्यस्थः सकल सुर सेवावसरदो  
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(3)

कृपा-पारावारः सजल जलद श्रेणी रुचिरो  
रमावाणीरामः स्फुरदमल पंकेरुहमुखः ।  
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा-गीतचरितो  
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(4)

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित भूदेव पटलैः  
 स्तुति प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकण्यं सदयः ।  
 दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया  
 जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(5)

परंब्रह्मापीडः कुवलय दलोत्फुल्ल नयनो  
 निवासी नीलाद्रौ निहित चरणोऽनन्त शिरसि ।  
 रसानन्दी राधा सरस वपुरालिङ्गं सुखो  
 जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(6)

न वै याचे राज्यं न च कनक माणिक्य विभवं  
 न याचेऽहं रम्यां सकल जन काम्यां वरवधूम् ।  
 सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो  
 जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(7)

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते !  
 हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते !  
 अहो दीनेऽनाथे निहित चरणो निश्चितमिदं  
 जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥(8)

## श्रीचैतन्यशिक्षाष्टकम्

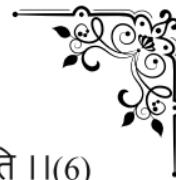
चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्नि निर्वापणं  
श्रेयः कैरवचन्द्रिका वितरणं विद्यावधूजीवनम् ।  
आनन्दाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं  
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्ण संकीर्तनम् ॥(1)

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्तिस्तत्रार्पिता  
नियमितः स्मरणे न कालः ।  
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि  
दुर्दैवमीदशमिहाजनि नाऽनुरागः ॥(2)

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।  
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥(3)

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये ।  
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्वक्तिरहैतुकी त्वयि ॥(4)

अयि नन्दतनुज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।  
कृपया तव पादपंकज स्थितधूलीसद्वशं विचिन्तय ॥(5)



नयनं गलदश्चु धारया वदनं गद्दृद् रुद्धया गिरा ।  
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नाम ग्रहणे भविष्यति ॥(6)

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।  
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्द विरहेण मे ॥(7)

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु  
मामदर्शनान्मर्हतां करोतु वा ।  
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो  
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ॥(8)



श्री जीवाष्टकम्

बुधभक्त गणार्चित पादयुगं  
परधर्म सुशिक्षक विश्वगुरुम् ।  
विपुलीकृत गौरव विश्व भुवं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (1)

द्विजवर्य-कुलोद्धव चन्द्रपुरे  
नृपबाल शिरोमणि रूप धृतम् ।  
शिशुकेलि सदारत कृष्ण गुणे  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (2)

जितकोमल चम्पक पुष्पतनुं  
मुखचन्द्र समुज्जवल चित्तहरम् ।  
सुरमर्त्य मनोहर रूपधृतं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (3)

सलिलाक्त गुरुस्मृति नेत्रयुगं  
तुलसी किल शोभित कण्ठ वरम् ।  
कविराजगणैः परिसेव्यपदं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (4)

गुरु रूपसनातन दास्यपरं  
परमाद्वतवल्लभ विप्रसुतम् ।  
परमार्थ परायण पूज्यपदं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (5)

अभिमान समुन्नत चित्तहरं  
छल भक्ति गजान्तक सिंह वरम् ।  
व्रजभक्ति विशारद पूज्य परं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (6)

हरिनामसमन्वितचित्रपरं  
अनुशासनशास्त्र सुगुम्फनकम् ।  
जगदुज्जवल कीर्ति गुणाढ्य वरं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (7)

हरि भक्ति सरोवर हंसवरं  
व्रजमञ्चरि भाव विलास वरम् ।  
करुणाकरतारक पात्रवरं  
प्रणमामि सदा प्रभु जीवपदम् ॥ (8)

श्री गुर्वाष्टकम्  
संसार दावानल लीढ लोक  
त्राणाय कारुण्य घनाघनत्वम् ।  
प्राप्तस्य कल्याण गुणार्णवस्य  
वन्दे गुरोः श्री चरणारविन्दम् ॥(1)

महाप्रभोः कीर्तन नृत्यगीत  
वादित्रमाद्यन् मनसौ रसेन ।  
रोमाञ्च कम्पाश्रु तरंग भाजो  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(2)

श्री विग्रहराधन नित्य नाना  
श्रृंगार तन् मन्दिर मार्जनादौ ।  
युक्तस्य भक्तांश्च नियुज्ञतोऽपि  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(3)

चतुर्विंधा श्री भगवत् प्रसाद  
स्वाद्वन्न तृप्तान् हरि भक्त संझान् ।  
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(4)

श्री राधिका माधवयोरपार  
माधुर्य लीला गुण रूप नामाम् ।  
प्रतिक्षणास्वादन लोलुपस्य  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(5)

निकुञ्ज यूनो रति केलि सिद्ध्यै  
या यालिभिर् युक्तिर् अपेक्षणीया ।  
तत्राति दाक्षाद् अतिवल्लभस्य  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(6)

साक्षाद् धरित्वेन समस्त शास्त्रैः  
उक्तस्तथा भाव्यत एव सन्धिः ।  
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(7)

यस्य प्रसादाद् भगवतप्रसादो  
यस्याप्रसादात् न गति कुतोऽपि ।  
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं  
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥(8)

## श्रीगुरु वंदना

श्रीगुरुचरण पद्म, केवल भक्ति सद्म,  
वन्दो मुइ सावधान मते ।  
याहाँर प्रसादे भाई, ए भव तरिया याइ,  
कृष्ण प्राप्ति हय याहाँ हइते ॥(1)

गुरुमुख पद्म वाक्य, चितेते करिया ऐक्य,  
आर न करिह मने आशा ।  
श्रीगुरुचरणे रति, इसे उत्तम गति,  
ये प्रसादे पूरे सर्व आशा ॥(2)

चक्षुदान दिलो येर्ई, जन्मे जन्मे प्रभु सेइ,  
दिव्य ज्ञान हृदे प्रकाशित ।  
प्रेम-भक्ति याहाँ हइते, अविद्या विनाश याते,  
वेदे गाय याहाँर चरित ॥(3)



श्रीगुरु करुणा-सिन्धु, अधम जनार बंधु,  
लोकनाथ लोकेर जीवन ।  
हा हा प्रभु कोरो दया, देह मोरे पद छाया,  
एबे यश घुषुक त्रिभुवन ॥(4)



### श्री दामोदराष्ट्रकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं  
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।  
यशोदाभियोलूखलाद्वावमानं  
परामृष्टमत्यंततो द्रुत्य गोप्या ॥(1)

रुदन्तं मुहुर्नेत्र युग्मं मृजन्तं  
कराम्भोजयुग्मेन सातङ्कःनेत्रम् ।  
मुहुः श्वासकंप त्रिरेखांककण्ठ  
स्थित ग्रैवदामोदरं भक्तिबद्धम् ॥(2)

इतीद्यक्स्वलीलाभिरानन्द कुण्डे  
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।  
तदीयेशितशेषु भक्तैर्जितत्वं  
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥(3)

वरं देव मोक्षं न मोक्षावधिं वा  
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह ।  
इदं ते वपुर्नाथ गोपालबालं  
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥(4)

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलैः  
 वृतं कुन्तलैः स्निग्धवक्रेश्व गोप्या ।  
 मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे  
 मनस्याविरास्तामलं लक्षलाभैः ॥(5)

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो !  
 प्रसीद प्रभो ! दुःखजालाब्धिमग्रम् ।  
 कृपादृष्टिवृष्टयातिदीनं बतानु  
 गृहाणेश ! मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः ॥(6)

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्  
 त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च ।  
 तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ  
 न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥(7)

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने  
 त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने ।  
 नमो राधिकायै त्वदीय प्रियायै  
 नमोऽनन्त लीलाय देवाय तुभ्यम् ॥(8)  
 (श्री सत्यव्रत मुनिद्वारा कथित)

## गोपीगीत

### गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः

श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।

दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्

त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥(1)

शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदर श्रीमुषा दृशा ।

सुरतनाथ तेऽशुल्क दासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥(2)

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद्वैद्युतानलात् ।

वृषमयात्मजाद्विश्वतो भयाद ऋषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥(3)

न खलु गोपिकानन्दनो भवान् अखिलदेहिनामन्तरात्मद्वक् ।

विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥(4)

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसुतेभ्यात् ।

करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥(5)

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।

भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥(6)

प्रणतदेहिनां पापकर्षणं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।  
फणिफणार्पितं ते पदांबुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हच्छयम् ॥(7)

मधुरया गिरा वल्मुवाक्यया बुधमनोज्जया पुष्करेक्षणं ।  
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीर अधरसीधुनाप्याययस्व नः ॥(8)

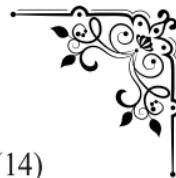
तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।  
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥(9)

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ये ध्यानमङ्गलम् ।  
रहसि संविदो या हृदि स्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥(10)

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।  
शिलतुणांकुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥(11)

दिन परिक्षये नीलकुन्तलैर् वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।  
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुरः मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥(12)

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।  
चरणपंकजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥(13)



सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।  
इतरराग विस्मारणं नृणां वितर वीरं नस्तेऽधरामृतम् ॥(14)

अटति यद् भवानहि काननं त्रुटि युगायते त्वामपश्यताम् ।  
कुटिलं कुन्तलं श्रीमुखं च ते जडं उदीक्षितां पक्ष्मकृददशाम् ॥(15)

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवान् अतिविलङ्घ्य तेऽन्यच्युतागताः ।  
गतिविदस्तवोदीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥(16)

रहसि संविदं हच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।  
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥(17)

व्रजवनौकसां व्यक्तिरंगं ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमंलम् ।  
त्यज मनाक् च नस्त्वत्पृहात्मनां स्वजनहद्वुजां यन्त्रिषूदनम् ॥(18)

यते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः  
शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।  
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किं स्वित्  
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥(19)



भक्तिरसाचार्य महामहिम  
श्रील रूप गोस्वामीपाद विरचित श्रीउपदेशामृत

वाचोवेगं मनसः क्रोधवेगं  
जिह्वावेगमुदरोपस्थ वेगं ।  
एतान् वेगान् यो विषहेत धीरः  
सर्वामपीमां पृथिवीं स शिष्यात् ॥(1)

अत्याहारः प्रयासश्च प्रजल्पो नियमाग्रहः ।  
जनसंगश्च लौल्यं च षड्भिर्भक्तिविनश्यति ॥(2)

उत्साहान्त्रिश्याद्वैर्यात् तत्कर्मप्रवर्त्तनात् ।  
संगत्यागात् सतो वृत्तेः षड्भिर्भक्तिः प्रसिद्धयति ॥(3)

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति ।  
भुङ्कते भोजयते चैव षड्विधं प्रीति लक्षणं ॥(4)

कृष्णेति यस्य गिरि तं मनसाद्रियेत  
दीक्षास्ति चेत् प्रणतिभिश्च भजन्तमीशम् ।  
शुश्रूषया भजनविज्ञमनन्यमन्य  
निन्दादिशून्यहृदमीस्तिसङ्गलब्ध्या ॥(5)

दृष्टेः स्वभावजनितैर्वपुषश्चदोषैर्न  
 प्राकृतत्वमिह भक्तजनस्य पश्येत् ।  
 गंगाम्भसां न खलु बुद्धुदफेन  
 पड़कैर्ब्रह्मद्रवत्वमपगच्छति नीरधर्मैः ॥(6)

स्यात् कृष्णनामचरितादि सिताप्यविद्या-  
 पित्तोपतप्तरसनस्य न रोचिका नु ।  
 किन्त्वादरादनुदिनं खलु सैव जुष्टा  
 स्वाद्वी क्रमाद्भवति तद्गतमूलहन्ती ॥(7)

तत्रामरूपचरितादि सुकीर्तनानुस्मृत्योः  
 क्रमेण रसनामनसी नियोज्य ।  
 तिष्ठन् व्रजे तदनुरागिजनानुगामी कालं  
 नयेदखिलमित्युपदेश सारम् ॥(8)

वैकुण्ठाज्जनितो वरा मधुपुरी तत्रापि रासोत्सवाद्  
 वृन्दारण्यमुदारपाणिरमणात्तत्रापि गोवर्ढनः ।  
 राधाकुण्डमिहापि गोकुलपते: प्रेमामृतेष्प्लावनात्  
 कुर्यादस्य विराजतो गिरितटे सेवां विवेकी न कः ॥(9)

कर्मिभ्यः परितो हरेः प्रियतया व्यक्तिं युज्ञानिनस्तेभ्यो  
ज्ञानविमुक्तभक्तिपरमाः प्रेमैकनिष्ठास्ततः ।  
तेभ्यस्ताः पशुपालपङ्कजदशस्ताभ्योऽपि सा राधिका  
प्रेष्ठा तद्वदियं तदीय सरसी तां नाश्रयेत् कः कृती ॥(10)

कृष्णस्योच्चैः प्रणयवसतिः प्रेयसिभ्योऽपि  
राधाकुण्डं चास्या मुनिभिरभितस्ताद्गेव व्यधायि ।  
यत्प्रेष्ठैरप्यलमसुलभं किं पुनर्भक्तिभाजां  
तत्प्रेमेदं सकृदपि सरः स्नातुराविष्करोति ॥(11)

## दशावतार स्तोत्र

(श्रील जयदेव गोस्वामी विरचित)

प्रलयपर्योधिजले धृतवानसि वेदं

विहित वहित्र चरित्रमखेदम्

केशव धृतमीन शरीर जय जगदीश हरे ! (1)

क्षितिरिह विपुलतरे तिष्ठति तव पृष्ठे

धरणीधरणकिण चक्र गरिष्ठे

केशव धृतकूर्मशरीर जय जगदीश हरे (2)

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना

शशिनि कलंकलेव निमग्ना ।

केशव धृतशूकर रूप जय जगदीश हरे ! (3)

तव कर कमलवरे नखमद्भुत शृङ्गं

दलित हिरण्यकशिपु तनु भृङ्गम्

केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ! (4)

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन

पदनखनीरजनित जन पावन ।

केशव धृत वामनरूप जय जगदीश हरे ! (5)

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं  
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ।  
केशव धृतभृगुपति रूप ! जय जगदीश हरे ! (6)

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति कमनीयं  
दशमुखमौलि बलि रमणीयम् ।  
केशव धृत राम शरीर जय जगदीश हरे ! (7)

वहसि वपुषी विशदे वसनं जलदाभं  
हलहतिभितिमिलित यमुनाभम् ।  
केशव धृतहलधर रूप जय जगदीश हरे ! (8)

निन्दसि यज्ञ विधेरहह श्रुतिजातं  
सदयहृदय दर्शित पशुघातम् ।  
केशव धृतबुद्ध शरीर जय जगदीश हरे ! (9)

मलेच्छ निवहनिधने कलयसि करवालं  
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।  
केशव धृतकल्कि शरीर जय जगदीश हरे ! (10)

आह्वान कीर्तन -1

(हरि हरये नमः )

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।

यादवाय माधवाय केशवाय नमः ॥(1)

गोपाल गोविन्द राम श्री मधुसूदन ।

गिरिधारी गोपीनाथ मदन मोहन ॥(2)

श्री चैतन्य नित्यानन्द श्री अद्वैत सीता ।

हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता ॥(3)

श्री रूप सनातन भट्ट रघुनाथ ।

श्री जीव गोपाल भट्ट दास रघुनाथ ॥(4)

एह छह गोसाँईर करि चरण वंदन ।

जहाँ होइते विघ्न नाश अभीष्ट पुरण ॥(5)

एइ छह गोसाँई यार मुइ तार दास ।

तां सबार पद रेणू मोर पंच ग्रास ॥(6)

तांदेर चरण सेवी भक्त सने वास ।

जनमें जनमें होए एइ अभिलाष ॥(7)

एइ छह गोसाइ जबे व्रजे कोइला वास ।  
राधा कृष्ण नित्य लीला करिला प्रकाश ॥(8)

आनंदे बोलो हरि भज वृदावन ।  
श्री गुरु वैष्णव पदे मजाइया मन ॥(9)

श्री गुरु वैष्णव पाद पद्म करि आश ।  
नाम संकीर्तन कहे नरोत्तम दास ॥(10)

**आह्वान कीर्तन -2**  
**(जय राधा माधव )**

जय राधा माधव, जय कुंज बिहारी ।  
जय गोपीजन वल्लभ, जय गिरिवरधारी ॥

जय यशोदानन्दन, जय व्रजजन रंजन ।  
जय यमुनातीर वनचारि, जय कुंजबिहारी ॥



श्रीमद् भागवत की आरती  
आरती अति पावन पुराण की ।  
धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

महापुराण भागवत निर्मल ।  
शुक मुख विगलित निगम कल्प फल ।  
परमानन्द सुधा रसमय कल ।  
लीला रति रस रस निधान की ॥ आरती.....

कलि मल मथनि त्रिताप निवारिणि ।  
जन्म मृत्युमय भव भय हारिणि ।  
सेवत सतत सकल सुख कारिणि ।  
सुमहोषधि हरि चरित गान की ॥ आरती .....

विषय विलास विमोह विनाशिनि ।  
विमल विराग विवेक विकाशिनि ।  
भगवत तत्त्व रहस्य प्रकाशिनि ।  
परम ज्योति परमात्म ज्ञान की ॥ आरती .....

परमहंस मुनि मन उल्लासिनि ।  
रसिक हृदय रस रास विलासिनि ।  
भुक्ति, मुक्ति, रति प्रेम सुदासिनि ।  
कथा अंकिचनप्रिय सुजान की ॥ आरती .....

## श्रीराधा दामोदर जी की आरती

श्रीराधा दामोदर तेरी आरती गाऊँ,  
आरती गाऊँ प्यारे तुझको रिझाऊँ ।  
श्रीराधा दामोदर तेरी आरती गाऊँ.....  
चरणों से निकली है गंगा प्यारी,  
जिसने सारी दुनिया तारी।  
उन चरणों में मैं शीश झुकाऊँ ॥  
श्रीराधा दामोदर तेरी आरती गाऊँ.....  
मोर मुकुट तेरे शीश पे सोहे,  
प्यारी बंसी मुनि मन मोहे ।  
देख छवि बलिहारी मैं जाऊँ ॥  
श्रीराधा दामोदर तेरी आरती गाऊँ.....  
अपने भक्तों के नाथ आप हो,  
सुख और दुःख में हर पल साथ हो।  
प्यारे श्यामसुन्दर तुझे अपना बनाऊँ ॥  
श्रीराधा दामोदर तेरी आरती गाऊँ.....  
श्रीजीवगोस्वामी के प्यारे आप हो,  
मेरे मोहन जीवन धन हो ।  
देख युगल छवि बलि-बलि जाऊँ ॥  
श्रीराधा दामोदर तेरी आरती गाऊँ.....

## श्री गौर आरती

जय जय गौराचाँद आरती के शोभा ।  
जाह्नवी तट वने जगमन लोभा ॥  
दक्षिणे निर्ताई चाँद वामे गदाधर ।  
निकटे अद्वैत श्री वास छत्रधर ॥  
बसियाछे गौराचाँद रत्न सिंहासने ।  
आरति करेन ब्रह्मा आदि देवगणे ॥

नरहरि आदि करि चामर दुलाय ।  
सञ्जय मुकुंद वासुधोष आदि गाय ॥  
शंख बाजे घण्टा बाजे, बाजे करताल ।  
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल ॥  
बहु कोटि चन्द्र जिनि वदन उज्जवल ।  
गलदेशे वनमाला करे झालमल ॥  
शिव शुक नारद प्रेमे गद्गद ।  
भक्ति विनोद देखे गौरार सम्पद ॥



श्री नृसिंह आरती  
 नमस्ते नरसिंहाय  
 प्रह्लादह्लाद दायिने ।  
 हिरण्यकशिपोर्वक्षः  
 शिलाटंक नखालये ॥  
 इतो नृसिंहः परतो नृसिंहः  
 यतो यतो यामि ततो नृसिंहः  
 बहिनृसिंहोहदये नृसिंहो  
 नृसिंहमादि शरणं प्रपद्ये ॥  
 तव कर कमल वरे नखम् अद्भुत श्रृङ्गम्  
 दलित हिरण्यकशिपु तनु भृङ्गम्  
 केशव धृत नर हरिरूप जय जगदीश हरे ।



## श्री तुलसी आरती

नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी ।  
राधा-कृष्ण सेवा पाबो एइ अभिलाषी ॥  
ये तोमार शरण लय, तार वाज्छा पूर्ण हय ।  
कृपा करि कर तारे वृन्दावनवासी ॥  
मोर एइ अभिलाष, विलास कुंजे दिओ वास ।  
नयने हेरिब सदा युगल रूप राशि ॥  
एइ निवेदन धर, सखीर अनुगत कर ।  
सेवा अधिकार दिये कर निज दासी ॥  
दीन कृष्णादासे कय, एइ येन मोर हय ।  
श्री राधा गोविन्द प्रेमे सदा येन भासि ॥



छः वैष्णव अपराध  
हन्ति निन्दति वै द्वेष्टि वैष्णवान्नाभिनन्दति ।  
क्रुद्धति याति नो हर्ष दर्शने पतनानि षट् ॥

- 1) वैष्णव को शारीरिक प्रताड़ना देना ।
- 2) उनकी निंदा करना ।
- 3) उनसे द्वेष करना ।
- 4) उनका अभिनन्दन न करना ।
- 5) उन पर क्रुद्ध होना ।
- 6) उनके दर्शन से हर्षित न होना

ये छः भक्ति पथ से पतन के  
कारणस्वरूप वैष्णव अपराध हैं ।



## दस नामापराध

1) सतां निंदा नाम्नः परमपराधं वितनुते,

यतः ख्याति यातं कथमुसहते तद्विग्रहाम्

अर्थात् जो भक्त भगवान् की ख्याति का विस्तार करते हैं

(प्रचारक); उनकी निंदा परम नाम अपराध है। ऐसे

प्रचारक भक्तों को भगवान् अपने विग्रह की भाँति मानते हैं;

इसलिए उनके प्रति अपराध को कैसे सहन करेंगे ?

2) शिवस्य श्रीविष्णोर्य इह गुणनामादि सकलं,

थिया भिन्नम् पश्येत स खलु हरिनामाहितकरः

अर्थात् जो व्यक्ति श्रीशिव और श्रीविष्णु या श्रीकृष्ण के

गुण-नाम-रूप-लीला को पूर्णतः भिन्न अथवा स्वतन्त्र

समझता है वह हरि नामापराधी है। दूसरे शब्दों में श्रीशिव

श्रीहरि से स्वतन्त्र नहीं है अपितु उनके अत्यंत

प्रिय सेवक होने से उनके अधीनस्थ हैं।

**दूसरा भावार्थ** - श्रीविष्णु या श्रीकृष्ण के मंगलमय नाम-रूप- गुण-लीला को पूर्णतः भिन्न समझना नामापराध है अर्थात् श्रीकृष्ण के नाम-रूप-गुण-लीला अभिन्न सच्चिदानन्दमय है; जो इन्हें भिन्न-भिन्न समझेगा वह नामापराधी है ।

### 3) गुरोर्वज्ञा

अर्थात् आध्यात्मिक गुरु की आध्यात्मिक एवं भक्तिशास्त्र सम्मत आज्ञा का उल्लंघन करना तथा गुरु की अवमानना या अनादर करना ।

### 4) श्रुतिशास्त्रनिन्दनं

अर्थात् वेद-शास्त्रों की निंदा करना ।

### 5) तथार्थवादो

अर्थात् हरिनाम की शास्त्रोक्त महिमा को अतिशयोक्ति मानना ।

### 6) हरिनाम्नि कल्पनम्

अर्थात् हरिनाम की शास्त्रोक्त महिमा को मनोकलिप्त मानना ।



7) नामो बलाद्यस्य हिपापबुद्धिर्विद्यते तस्य यमैर्हिशुद्धि  
 अर्थात् हरिनाम के बल पर पाप करने की प्रवृत्ति रखना ।  
 ऐसी प्रवृत्ति रखने वाले को इतना घोर नामापराध  
 लगता है कि स्वयं यमराज जी भी अपनी यमयातनाओं  
 से उसे शुद्ध नहीं कर सकते ।

8) धर्म- व्रत-त्याग-हुत-आदि सर्व शुभ क्रिया साम्यमपि प्रमादः  
 अर्थात् वर्णश्रिम धर्म, भक्ति रहित व्रत, भक्ति रहित त्याग,  
 भक्ति रहित यज्ञ आदि सभी शुभक्रियाओं  
 (कर्मकांडों) को हरिनाम के तुल्य समझना और  
 असावधानी पूर्वक (प्रमादपूर्वक) हरिनाम करना ।

9) अश्रद्धानेविमुखे ४्यश्रृण्वतियश्चोपदेशः शिवनामापराधः  
 अर्थात् अश्रद्धालुओं और हरिविमुखों को मंगलमय हरिनाम  
 की महिमा का उपदेश सुनाना नामापराध है ।



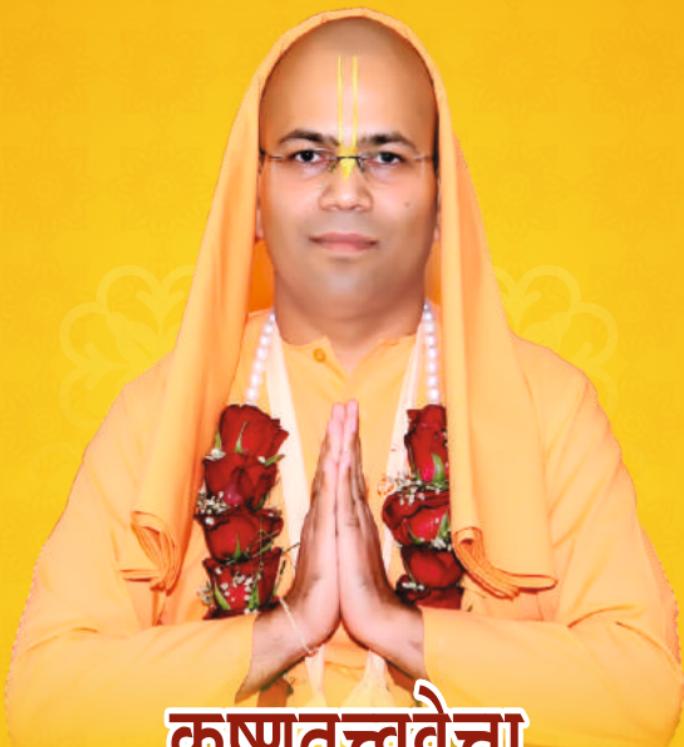
१०) श्रुत्वापि नाममाहात्म्ये यः प्रीतिरहितोऽधमः ।

अहं ममादि परमोनाम्नि सोऽप्यपराधकृत ॥

अर्थात् जो हरिनाम की परम महिमा सुनकर भी उसमें  
प्रीतिरहित है और मैं-मेरा की भावना से ग्रसित है वह  
भी नामापराधी है ।

श्री कृष्ण प्रेम प्राप्ति के लिए इन छः वैष्णव अपराधों  
और १० नाम अपराधों से बचना आवश्यक है ।





कृष्णतत्त्ववेत्ता  
श्री तेजरखी दास जी

संस्थापकाध्यक्ष :- **GBPS** द्रुख्ट वृन्दावन



# GBPS (गीता-भागवत प्रचार सेवा) Trust Vrindavan

# 3B/002, Radha Omaxe Eternity, Chattikara Road, Vrindavan



Shailvasini dasi



shailvasinidasi



[www.gbps.life](http://www.gbps.life)



98777-77499



72987-77773



[channel/gbps.life](https://channel/gbps.life)



[channel@Krishna Bhakti Shiksha](mailto:channel@Krishna Bhakti Shiksha)